जैन तीर्थ भाव वंदना

श्री सम्मेद शिखर जी - तीर्थराज

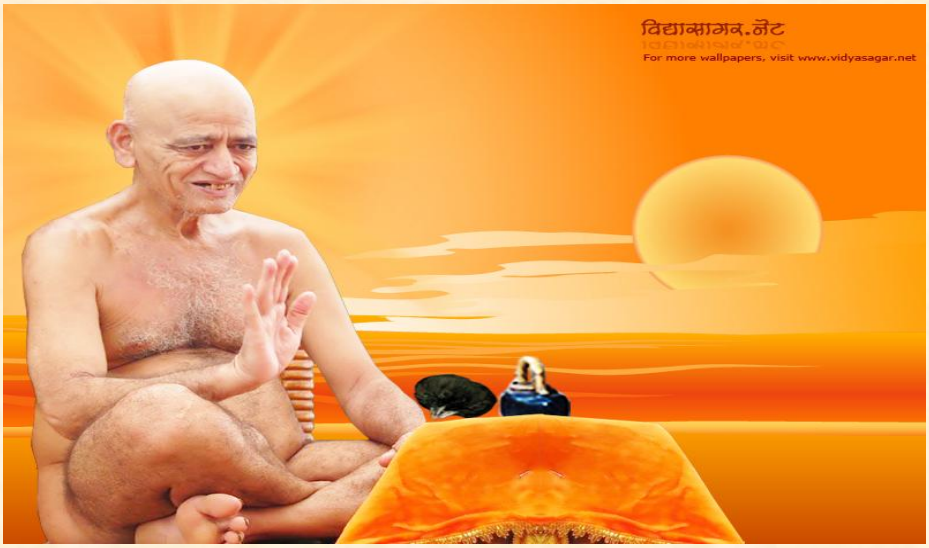

- सुलभ जैन (बाह)

आइये समझते है, शास्त्रानुसार तीर्थ से क्या तात्पर्य होता है ?

_____

तीर्थ की परिभाषा

तीर्थ शब्द तृ धातु से निष्पत्र हुआ है, व्याकरण की दृष्टि से इस शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है, **"तीर्थन्ते अनेन अस्मिन वा" तृ प्लवनतरणयोः इति थक्"** अतः तृ धातु के साथ थक् प्रत्यय लगाकर तीर्थ शब्द की उत्पत्ति होती है। इसका अर्थ है, जिसके द्वारा अथवा जिसके आधार से तरा जाये ।

संसारा ब्धेरपारस्य तरणे तीर्थमिष्यते ।
चेष्टितं जिननाथानां तस्योक्तिस्तीर्थसंकथा ।।

~ जिनसेन कृत आदिपुराण [४१८]

अर्थात जो इस अपार संसार समुद्र से पार करे उसे तीर्थ कहते है, ऐसा तीर्थ जिनेन्द्र भगवान् का चरित्र ही हो सकता है । यहाँ जिनेन्द्र भगवान् के चरित्र को तीर्थ कहा गया है

सम्मेद शिखर यात्रा - विशेष

"सोपानेपु सकष्टमिष्टसुकृतादारहया यान् वन्दते ।"
"सौधर्माधिपति प्रतिष्टितत्रपुष्का ये जिना विशतिः ।"
"मुख्याः स्वप्रमितिप्रभाभिर तुला समेदपृथ्वीरुही,"
"भव्योजयस्तु न पश्यति ध्रुवमिदं दिग्वाससा शासनम् ।"

- "शासन चतुस्त्रिशिका"

अर्थ।

सौधर्म इंद्र ने सम्मेद शिखर पर, जहाँ जहाँ बीस तीर्थंकरो की प्रतिमा प्रतिष्टित की है। तथा जो प्रतिमाये अपने आकार की प्रभा से तुलनारहित है, उस सम्मेद रूपी वृक्ष पर भव्यजन पुण्य उदय से ही उन प्रतिमा की वंदना कर सकते है । इन के अतिरिक्त इस पहाड़ पर उनके दर्शन अन्य कर ही नही सकते ।

आप सभी को सादर जय जिनेन्द्र,, हमारी जैन तीर्थ भाव वंदना श्रृंखला की १०२वी कड़ी में हम अब वंदना करते है,, तीर्थों के राजा कहे गए अनादिनिधन तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी की ! श्री सम्मेद शिखर तीन विशाल पर्वतों की लंबी श्रृंखला हैं, जिसकी ऊंचाई समुद्रतल से लगभग 5200 फीट है।

इस तीर्थमाला चैत्यवंदन में अंकित है- **वंदेऽष्टापदगुंड रेजनपदे सम्मते शैलाभिथे।** जैन कविवर घानत राय जी ने निर्वाण क्षेत्र पूजा में यहां की महिमा पर लिखा हैं कि एक बार बंदे करे कोई। ताकि नरक पशुगति नहीं होई।। इस स्थान की एक बार वन्दना करने का फल मात्र नरक और पशुगति से ही छुटकारा नहीं है अपितु परम्परा से संसार से भी छुटकारा मिल जाता है।

तो आईये, इस पावन क्षेत्र के कण कण में समाहित वीतरागी भगवानो की जानकारी करते हुए, हर टोंक की भाव पूर्ण वंदना करते है !

सबसे पहले जानते है, सम्मेद शिखर जी पर पहाड़ [टोंक] की वंदना **कैसे** करे ?

1. हम जब टोंक की सीढियों पर कदम रखे सबसे पहले दहलीज़ को हाथो से स्पर्श करते हुए माथे पर लगाए!

2. ॐ जय जय जय बोले और जिन भगवान् की वो टोंक है उनकी जय बोले, फिर मन, वचन और काय और पूरा भावो से भक्ति से.... उदहारण स्वरुप "पार्श्वनाथ जिनराज का, स्वर्ण भद्र कूट है जेह" ... ये वाली पंक्तिया बोले (हर टोंक के अलग -२ नाम है, जिनकी जानकारी हम आगे देंगे)..और द्रव्य चढ़ाए |

3. फिर जिस स्थान पर भगवान् के चरण है उस स्थान पर सीधा आसमान में देखकर नमस्कार करे क्योंकि जो जीव जिस स्थान से मुक्त होते है वो उसी स्थान पर उपर सिद्ध शिला पर विराजमान रहते है, क्योकि जीव की गति एक दम सीधी रहती है | इसका मतलब ये हुआ की पहाड़ जो जहाँ जहाँ टोंक है! वो तीर्थंकर उसी स्थान के ठीक ऊपर सिद्धशिला पर विराजमान है |

4. फिर तीन लोक के नाथ की तीन परिक्रमा करे |

5. अगर समय हो तो हर टोंक पर कुछ समय रुक कर कुछ स्तोत्र या जाप करना चाहिए ! जिन भगवान् की टोंक है, उनके जीवन चरित्र के स्मरण कर भाव बनाये !

6. पर्वत पर वंदना की जल्दीबाजी न करते हुए कोई प्रतिस्पर्धा भाव न बनाये, शास्त्रों में शिखर जी की भाव पूर्ण वंदना का फल बताते हुए कहा है कि व्यक्ति इस पर्वत की वंदना करके अधिकतम ४९ भव

धारण करने के बाद मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। ऐसे पावन सिद्धधाम शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर को कोटि-कोटि नमन।

पर्वत पर वंदना के लिए यात्री गर्मियों में सुबह तीन बजे तथा सर्दियों में सुबह चार बजे से वंदना के लिए चढ़ाई शुरू कर देते हैं, ऐसा इसलिए क्योंकि पूरे पहाड़ पर बिजली व्यवस्था नहीं है। इसीलिए वंदना हेतु प्रात: जल्दी यात्रा शुरू करनी पड़ती है ताकि शाम होने से पहले पहाड़ से नीचे आ जाएं।

चढ़ाई काफी कठिन और दुर्गम रास्तों से भरी है। इसलिए अपने साथ यात्री लाठी और टार्च साथ लेकर जाते हैं।

बच्चे और बड़े-बुर्जुग जो पहाड़ की वंदना पैदल करने में असमर्थ होते हैं, उनके लिए डोली की व्यवस्था है। यह इस क्षेत्र का प्रभाव ही है कि गगनचुंबी पहाड़ पर नंगे पैर चढ़ते हुए भी उनके मुख से जय-जयकार के स्वर पूरे पर्वत पर गुंजायमान होते रहते हैं।

अब मधुबन से ही शुरू करते है, पर्वतराज की वंदना... तीर्थरक्षक देव श्री भोमियाजी महाराज के दर्शन तलहटी में करने के साथ चढ़ाई शुरू करें। यहाँ से चलने पर आगे गंधर्व नाला आता है। थोड़ा आगे जाने पर दो मार्ग मिलते हैं, एक से गौतमस्वामी जी के शिखर से जल मंदिर जा सकते हैं, दूसरे मार्ग से डाक बंगला होकर श्री पार्श्वनाथ शिखर पर जाया जा सकता है।

- **<u>जल मंदिर</u>**

1. प्रथम टोंक - भगवान गौतम स्वामी

पहली बार यात्रा करने वाले तीर्थयात्री और सभी शिखर की यात्रा जल मन्दिर के मार्ग से शुरू करते हैं। इसके आगे सीता नाला आता है। यहीं से मुख्य चढ़ाई प्रारंभ हो जाती है। शिखर पर सबसे पहले भगवान गौतम स्वामी की टोंक हैं। यात्रीगण इस टोंक पर सात बजते-बजते पहुंचने लगते हैं।

प्रात: काल जब उगते सूर्य की लाल किरणें पहाड़ों पर अपनी सुंदर छटा बिखेरती हैं, तो पर्वत का मनोरम दृश्य बहुत लुभावना लगता है।

इस टोंक पर चौबीस तीर्थंकर के चरण चिन्ह व् 10 अन्य गणधरों के चरण चिन्ह श्वेत पाषाण से निर्मित है, बायीं और गौतम स्वामी के चरण बने हुए है, जो काले पाषाण से बने है ।

गौतम स्वामी की टोंक पर एक विश्राम गृह भी बना हुआ है जो यात्रियों के लिए विश्राम के काम आता है।

इस स्थान से चारों ओर रास्ते जाते हैं

१. बायीं ओर कुंथुनाथ टोंक को,
२. दायीं ओर पार्श्वनाथ मंदिर को,
३. सामने जल मंदिर और
४. पीछे मधुवन को।

टोंक से बायें हाथ की ओर मुड़कर पूर्व दिशा की पन्द्रह टोंकों की वंदना करनी चाहिए। ये टोंके ही कूट कहलाती हैं। इन टोंकों के नाम क्रमश: इस प्रकार हैं-

(१) कुंथुनाथ का ज्ञानधर कूट
(२) नमिनाथ का मित्रधर कूट
(३) अरहनाथ का नाटक कूट
(४) मल्लिनाथ का सम्बल कूट
(५) श्रेयांसनाथ का संकुल कूट
(६) पुष्पदंत का सुप्रभ कूट
(७) पद्मप्रभु का मोहन कूट
(८) मुनिसुव्रतनाथ का निर्जर कूट
(१०) आदिनाथ का कूट
(११) शीतलनाथ का विद्युत कूट
(१२) अनन्तनाथ का स्वयंभू कूट
(१३) संभवनाथ का धवलदत्त कूट
(१४) वासुपूज्य का कूट
(१५) अभिनन्दन का आनंद कूट ।

इन टोंकों में भगवान चन्द्रप्रभु की टोंक बहुत ऊँची हैं। ये सभी टोंके पूर्व दिशा में हैं। इनमें तीर्थंकरों के चरण विराजमान हैं। इन टोंकों पर जाने के लिए मार्ग बने हुए हैं। तीर्थंकर-चरणों पर जो लेख पूर्व में खुदे हुए थे, उनके अनुसार ये सब सं. १८२५ में प्रतिष्ठित किये गये प्रतीत होते हैं किन्तु वर्तमान में लगभग १५-२० वर्षों में ये चरण और प्रशस्तियाँ प्राय: बदल दी गई हैं।

2. श्री कुंथुनाथ भगवान का ज्ञानधर कूट

गौतम स्वामी जी के टोंक दर्शन के बाद अब बायीं ओर कुछ दुरी पर आगे बढ़ते हुए, १७वें तीर्थंकर की टोंक पर आते है । श्री कुंथुनाथ भगवान का ज्ञानधर कूट ! भगवान श्री कुंथुनाथ जी को वैसाख शुक्ल एवम को अपरान्ह काल में श्री सम्मेद शिखर के इसी श्री ज्ञानधर कूट से मोक्ष प्राप्त हुआ था । अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करें,,

आइये जानते है,, अपने १७वें तीर्थकर के जीवन की कुछ बातें

श्री कुंथुनाथ भगवान ने कुरू वंश में जन्म लिया था । भगवान कुंथुनाथ जी की आयु पंन्चानवे हजार वर्ष एवं आपका कुमार काल तेइस हजार सात सौ पचास वर्ष का था। भगवान का शरीर तपाये हुये स्वर्ण वर्ण के समान थे। कुंथुनाथ भगवान छठवें चक्रवर्ती राजा एवं कामदेव पद से सुशोभित थे। भगवान को वैराग्य, जाति स्मरण से हुआ था। श्री कुंथुनाथ भगवान को चैत्र शुक्ला तीज को अपरान्ह काल में हस्तिनापुर नगर के सहेतुक वन में तिलक वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। श्री कुंथुनाथ भगवान का केवली काल तेईस हजार सात सौ चैतीस वर्ष का था। श्री जी के समवशरण में पैंतीस गणधर विराजते थे। इनमे प्रमुख गणधर श्री स्वयंभू थे।

अब कुंथुनाथ जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है, २१वें तीर्थंकर श्री नमिनाथ जी की टोंक की ओर ।।

3. नमिनाथ जी जिनराज का मित्रधर कूट

कुंथुनाथ जी के टोंक दर्शन के बाद अब आगे की ओर बढ़ते हुए, २१वें तीर्थंकर की टोंक पर आते है ।
"बोलिये श्री नमिनाथ जी जिनराज का मित्रधर कूट है जेह"

श्री नमिनाथ भगवान को वैशाख कृष्ण चौदस की प्रातः काल में श्री सम्मेद शिखर के श्री मित्रधर कूट से मोक्ष प्राप्त हुआ था। अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है,

श्री नमिनाथ भगवान का जन्म इक्ष्वाकु वंश में हुआ था । भगवान की आयु दस हजार वर्ष थी एवं कुमार काल दो हजार पाँच सौ वर्ष था । श्री नमिनाथ भगवान राज्य काल पाॅच हजार वर्ष का था। भगवान का शरीर स्वर्ण वर्ण का था। भगवान श्री नमिनाथ को वैराग्य, जाति स्मरण से हुआ था। श्री नमिनाथ भगवान को मगसिर शुक्ल ग्यारस को अपरान्ह काल में मिथला नगर के चैत्रवन में मौली श्री (वकुल) वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। भगवान का केवली काल दो हजार चार सौ इक्यांनवें वर्ष का था । श्री जी के समवशरण में सत्रह गणधर विराजते थे, इनमें प्रमुख गणधर श्री सुप्रभ थे। श्री नमिनाथ भगवान के शासनकाल में श्री जयसेन नाम के चक्रवर्ती हुए थे।

अब नमिनाथ जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए पहुँचते है, तीर्थंकर श्री अरहनाथ जी की टोंक की ओर ।।

4. श्री अरहनाथ जिनराज का नाटक कूट

भगवान् नमिनाथ जी के टोंक दर्शन के बाद अब आगे की ओर बढ़ते हुए, १८वें तीर्थंकर की टोंक पर आते है । **बोलिये श्री अरहनाथ जिनराज का नाटक कूट है जेह**

श्री अरहनाथ भगवान को चैत्र कृष्ण अमावस को प्रातः काल में श्री सम्मेद शिखर के श्री नाटक कूट से मोक्ष प्राप्त हुआ था। अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है,, आइये जानते है,, अपने १८वें तीर्थंकर के जीवन की कुछ बातें !

श्री कुंथुनाथ भगवान के मोक्ष जाने के एक हजार करोड़ वर्ष कम चैथाई पल्य बीत जाने पर श्री अरहनाथ भगवान हुए थें। श्री अरहनाथ भगवान का जन्म कुरू वंश में हुआ था एवं वे कश्यप गोत्र के थे । भगवान अरहनाथ की आयु चौरासी हजार वर्ष थी एवं कुमार काल इक्कीस हजार वर्ष का था। भगवान का शरीर स्वर्ण वर्ण का था । भगवान को वैराग्य शरद ऋतु के बादलों का नष्ट होना देखकर हुआ था । श्री अरहनाथ भगवान को कार्तिक शुक्ल बारह को अपरान्ह काल में हस्तिनापुर नगर के सहेतुक वन में आम्र वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। भगवान का केवली काल बीस हजार नौ सौ चौरासी वर्ष का था। श्री जी के समवशरण में तीस गणधर विराजते थे, इनमें प्रमुख गणधर श्री कुंभ जी थे। श्री अरहनाथ भगवान स्वयं चक्रवर्ती एवं कामदेव थे। भगवान के तीर्थ में श्री सुमौम चक्रवर्ती, श्री नंदी बलदेव श्री पुरूष पुंडरीक नारायण एवं श्री बली प्रतिनारायण हुए।

अब अरहनाथ जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है, १९ वें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जी की टोंक की ओर ।।

5. श्री मल्लिनाथ जिनराज का सम्बल कूट

भगवान् अरहनाथ जी के टोंक दर्शन के बाद अब आगे की ओर बढ़ते हुए, १९वें तीर्थंकर की टोंक पर आते है । **"बोलिये श्री मल्लिनाथ जिनराज का सम्बल कूट है जेह"**

श्री मल्लिनाथ भगवान को फाल्गुन सुदी पंचमी को सांय काल में श्री सम्मेद शिखर के श्री सम्बल कूट से मोक्ष प्राप्त हुआ था । अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है,, आइये जानते है,, अपने १९वें तीर्थंकर के जीवन की कुछ बातें !

भगवान श्री मल्लिनाथ का जन्म इक्ष्वाकु वंश में हुआ था। भगवान का गोत्र कश्यप था । श्री मल्लिनाथ भगवान की आयु पचपन हजार वर्ष थी एवं कुमार काल एक सौ वर्ष था। भगवान का शरीर स्वर्ण वर्ण का था। भगवान को वैराग्य, तड़ित देखकर हुआ था । श्री मल्लिनाथ भगवान को पौष सुदी दोज को अपरान्ह काल में मिथला नगर में मनोहर वन के अशोक वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। श्री जी के समवशरण में अटठाइस गणधर विराजते थे, इनमें प्रमुख गणधर श्री विशाख जी थे। श्री मल्लिनाथ भगवान के धर्म तीर्थ में श्री पद्म नाम के चक्रवर्ती, श्री नंदी मित्र नाम के बलभद्र, श्री पुष्पदंत नाम के नारायण एवं श्री प्रहरण नाम के प्रति नारायण हुए। श्री मल्लिनाथ भगवान बालब्रह्मचारी तीर्थकर हुए है।

अब मल्लिनाथ जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है, ११वें तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ जी की टोंक की ओर ।।

6. श्री श्रेयांशनाथ जिनराज का संकुल कूट

भगवान् मल्लिनाथ जी के टोंक दर्शन के बाद अब आगे की ओर बढ़ते हुए, ११वें तीर्थंकर की टोंक पर आते है । **"बोलिये श्री श्रेयांशनाथ जिनराज का संकुल कूट है जेह"**

भगवान श्री श्रेयांस नाथ को श्रावण शुक्ल पन्द्रस को पूर्वान्ह कल में श्री सम्मेद शिखर के श्री संकुल कूट से मोक्ष प्राप्त हुआ था। अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है,, आइये जानते है,, अपने ११वें तीर्थकर के जीवन की कुछ बातें !

श्री शीतलनाथ भगवान के मोक्ष जाने के एक सौ एक सागर में छयासठ लाख छब्बीस हजार वर्ष कम, वर्ष बीत जाने पर श्री श्रेयांश नाथ भगवान का जन्म हुआ था । श्री श्रेयांसनाथ भगवान इक्ष्वाकु वंश के थे एवं भगवान का शरीर स्वर्ण वर्ण का था। भगवान को वैराग्य बसंत लक्ष्मी का नाश (पतझड़) देखकर हुआ था। श्री श्रेयांसनाथ भगवान को माघ कृष्णा अमावश को अपरान्ह काल के मनोहर वन में तेंदुवृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। श्री जी के समवशरण में सत्तर गणधर विराजते थे इनमें प्रमुख गणधर श्री धर्म जी थे।

अब श्रेयांशनाथ जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है, ९वें तीर्थंकर श्री पुष्पदंत अथवा सुविधिनाथ जी की टोंक की ओर ।

7. श्री पुष्पदंत जी जिनराज का सुप्रभ कूट

भगवान् श्रेयांशनाथ जी के टोंक दर्शन के बाद अब आगे की ओर बढ़ते हुए, ९वें तीर्थंकर की टोंक पर आते है । बोलिये **"श्री पुष्पदंत जी जिनराज का सुप्रभ कूट है जेह"**

भगवान श्री पुष्पदंत नाथ को अश्विन सुदी अष्टमी को अपरान्ह काल में श्री सम्मेद शिखर के श्री सुप्रभ कूट से मोक्ष प्राप्त हुआ था।

अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है,, आइये जानते है,, अपने ९वें तीर्थंकर के जीवन की कुछ बातें !

श्री चंद्रप्रभु भगवान के मोक्ष जाने के नब्बे करोड़ सागर समय बीत जाने पर श्री पुष्पदंतनाथ भगवान का जन्म हुआ था। भगवान श्री पुष्पदंत नाथ जी इक्ष्वाकु वंश के थें एवं भगवान का शरीर श्वेत वर्ण का था। भगवान को वैराग्य उल्कापात देखकर हुआ था। श्री पुष्पदंत भगवान को कार्तिक शुक्ला दीज को अपरान्ह काल में काकंदी नगर के पुष्पक वन में बहेड़ा वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था । श्री जी के समवशरण में अटठासी गणधर विराजते थे, इनमें प्रमुख गणधर श्री नाग (अनगार) थे ।

अब पुष्पदन्त जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है, ६वें तीर्थंकर श्री पद्मप्रभू जी टोंक की ओर ।।

8. श्री पद्मप्रभु जी जिनराज का मोहन कूट

भगवान् पुष्पदंत जी की टोंक दर्शन के बाद अब आगे की ओर बढ़ते हुए, ६वें तीर्थंकर की टोंक पर आते है । "बोलिये **"श्री पद्मप्रभू जी जिनराज का मोहन कूट है जेह"**

श्री पद्मप्रभु जी भगवान फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी को अपरान्ह काल में श्री सम्मेद शिखर के श्री मोहन कूट से मोक्ष को प्राप्त हुए थे। आइये जानते है,, अपने ६वें तीर्थंकर के जीवन की कुछ बातें

श्री सुमतिनाथ भगवान के मोक्ष जाने के नब्बे हजार करोड़ सागर समय बीत जाने पर श्री पद्मप्रभुजी भगवान का जन्म हुआ था। भगवान श्री पद्मप्रभुजी इक्ष्वाकु वंश के थे एवं भगवान का शरीर विद्रुम (लाल वर्ण) वर्ण का था । भगवान को वैराग्य जाति स्मरण से हुआ था। श्री पद्मप्रभुजी भगवान को चैत्र शुक्ल पन्द्रस को अपरान्ह काल में कौशाम्बी नगर के मनोहर वन में प्रियंगुवृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था । श्री पद्मप्रभु जी भगवान के समवशरण में एक सौ ग्यारह गणधर विराजते थे, इनमें प्रमुख गणधर श्री चमर जी थे । भगवान श्री पद्मप्रभुजी ने अपने शासनकाल में महामण्डलीक राजा के पद को प्राप्त किया था।

अब पद्मप्रभू जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है, २०वें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत नाथ जी टोंक की ओर ।।

9. श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनराज का निर्जर कूट

भगवान् पद्मप्रभू जी की टोंक दर्शन के बाद अब आगे की ओर बढ़ते हुए, २०वें तीर्थंकर की टोंक पर आते है । बोलिये **"श्री मुनि सुव्रतनाथ जी जिनराज का निर्जर कूट है जेह"**

श्री मुनि सुव्रतनाथ भगवान को फाल्गुन कृष्ण बारस को अपरान्ह काल में श्री सम्मेद शिखर के श्री निर्जर कूट से मोक्ष प्राप्त हुआ था। आइये जानते है,, अपने २०वें तीर्थंकर के जीवन की कुछ बातें

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का जन्म हरिवंश (यादव वंश) में हुआ था। श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की आयु तीस हजार वर्ष की थी एवं उनका कुमार काल सात हजार पाँच सौ वर्ष था । भगवान ने पन्द्रह हजार वर्ष राज्य किया । भगवान का शरीर नील वर्ण का था। भगवान को वैराग्य जाति स्मरण द्वारा हुआ था । श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान को वैशाख कृष्ण नवमी केा पूर्वान्ह काल में राजगृही नगर के नीलवन में चम्पक वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। श्री जी के समवशरण में अठारह गणधर विराजते थे, इनमें प्रमुख गणधर श्री मल्लि थे। श्री मुनिसुव्रत नाथ भगवान के धर्म तीर्थ से श्री हरिसेन नाम के चक्रवर्ती, मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी नाम के बलदेव, श्री लक्ष्मण नाम के नारायण एवं श्री रावण नाम के प्रतिनारायण हुए थे।

अब मुनिसुव्रत नाथ जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है, प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ जी टोंक की ओर ।।

10. श्री चंद्रप्रभु जी जिनराज का ललित कूट

भगवान् मुनि सुव्रतनाथ जी की टोंक दर्शन के बाद अब आगे की ओर बढ़ते हुए, ८वें तीर्थंकर की टोंक पर आते है । बोलिये **"श्री चंद्रप्रभु जी जिनराज का ललित कूट है जेह"**

भगवान श्री चन्द्रप्रभु को फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को पूर्वान्ह काल में श्री सम्मेद शिखर के श्री ललित कूट से मोक्ष प्राप्त हुआ था। आइये जानते है,, अपने ८ वें तीर्थकर के जीवन की कुछ बातें

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के मोक्ष जाने के नौ सौ करोड़ सागर, बीत जाने पर श्री चन्द्रप्रभु भगवान का जन्म हुआ था । भगवान श्री चन्द्रप्रभु जी इक्ष्वाकु वंश के थे एंव भगवान का शरीर चन्द्रमा के समान श्वेत वर्ण का था। भगवान को वैराग्य तड़ित देखकर हुआ था। श्री चन्द्रप्रभु भगवान को फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को अपरान्ह काल के सवार्थवन में नागवृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। श्रीजी के समवशरण में तेरानवे गणधर विराजते थे इनमें प्रमुख गणधर श्री वैदर्भ (दत्त) थे।

ऐसा मानते है, कि चंपापुर के मुख्य मंदिर के समीप 2 विशाल स्तम्भो के आसपास से एक गुप्त सुरंग है, जो (लगभग १५० मील लंबी) श्री चंद्रप्रभु जी की टोंक के पास तक जाती है।

अब हम चंद्रप्रभु जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है, प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ जी टोंक की ओर ।।

11. श्री आदिनाथ जी जिनराज का कूट

भगवान् चंद्रप्रभु जी की टोंक दर्शन के बाद अब आगे की ओर बढ़ते हुए, प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ जी की टोंक पर आते है । बोलिये **"श्री आदिनाथ जी जिनराज का कूट है जेह"**

श्री आदिनाथ भगवान तृतीय काल में कैलाश पर्वत से माघ वदी चौदह पूर्वान्ह काल में मोक्ष गये थे। उस समय चतुर्थ काल प्रारंभ होने में तीन वर्ष आठ माह और पन्द्रह दिन शेष रह गये थे। अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है, अपने प्रथम तीर्थकर के जीवन की कुछ बातें -

जब तृतीय काल में चौरासी लाख वर्ष पूर्व तीन वर्ष साड़े आठ महीने प्रमाण काल शेष रह गया था,, तब श्री आदिनाथ जी का जन्म हुआ था। भगवान श्री आदिनाथ इक्ष्वाकु वंश के थे। भगवान का वर्ण तपाये हुये स्वर्ण के समान था। भगवान आदिनाथ के वैराग्य का कारण नीलाज्जना नर्तकी का नृत्य करते हुए भरण को प्राप्त होना था। श्री आदिनाथ भगवान की दीक्षा चैत कृष्ण नवमीं अपरान्ह समय उत्तराषाढा नक्षत्र में हुई थी। भगवान ने दीक्षा के पश्चात् एक हजार वर्ष तक तप किया। भगवान श्री आदिनाथ जी का प्रथम आहार श्रेयांश राजा द्वारा इक्षुरस आहार द्वारा हस्तिनापुर नगर में हुआ था। प्रथम आहार एक वर्ष उन्तालीस दिन पश्चात् हुआ था। भगवान श्री आदिनाथ को पुरिमतालपुर नगर के शकटास्य नामक उद्यान में वटवृक्ष के नीचे फाल्गुन वदी ग्यारस को केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। भगवान के समवशरण में चौरासी गणधर विराजते थे। इनमें प्रमुख गणधर श्री ऋषभ सेन जी थे।

श्री भगवान आदिनाथ स्वामी ने विदेह क्षेत्र की व्यवस्था के अनुसार क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र इन तीन वर्णो का प्रतिपादन किया था। एवं प्रजा को असिकर्म (शस्त्र विद्या), मसि कर्म (लेखन विद्या, तथा कृषि कर्म, वाणिज्य, शिल्प, विद्या आदि षटकर्म सिखाया था।

अब हम आदिनाथ जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है,,, १०वें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ जी की टोंक की ओर ।।

12. श्री शीतलनाथ जी जिनराज का विद्युत कूट

भगवान् आदिनाथ जी की टोंक दर्शन के बाद अब पर्वत पर आगे की ओर बढ़ते हुए, दसवें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ जी की टोंक पर आते है । बोलिये **"श्री शीतलनाथ जी जिनराज का विद्युत कूट है जेह"**

भगवान श्री शीतल नाथ को अश्विन शुक्ल अष्टमी पूर्वान्ह काल में श्री सम्मेद शिखर के श्री विद्युत कूट से मोक्ष प्राप्त हुआ था। अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है, अपने दसवें तीर्थकर के जीवन की कुछ बातें

श्री पुष्पदंत नाथ भगवान के मोक्ष जाने के सौ सागर समय पश्चात् श्री शीतलनाथ भगवान का जन्म हुआ था। भगवान श्री शीतलनाथ जी इक्ष्वाकु वंश के थे एवं भगवान का शरीर स्वर्ण वर्ण का था। भगवान को वैराग्य हिम का नाश देखकर हुआ था। श्री शीतल नाथ भगवान को पौष कृष्ण चतुर्दशी को अपरान्ह काल में सहेतुक वन में धूलीपलाश वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। श्री जी के समवशरण में सतासी गणधर विराजते थे इनमें प्रमुख गणधर श्री कुंथु जी थे।

अब हम श्री शीतल नाथ जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है,,, १४वें तीर्थंकर श्री श्री अनंतनाथ जी की टोंक की ओर ।।

13. श्री अनंतनाथ जी जिनराज का स्वयंभू कूट

भगवान् शीतलनाथ जी की टोंक दर्शन के बाद अब पर्वत पर दुर्गम रास्ते पर आगे की ओर बढ़ते हुए पहुँचते है, १४वें तीर्थंकर श्री अनंतनाथ जी की टोंक पर । बोलिये **"श्री अनंतनाथजी जिनराज का स्वयं भू कूट है जेह"**

भगवान श्री अनंतनाथ जी चैत्र कृष्णा अमावस्या को अपरान्ह काल में श्री सम्मेद शिखर के श्री स्वयं भू कूट से मोक्ष को प्राप्त हुए थे। अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है, अपने १४वें तीर्थंकर के जीवन की कुछ बातें

श्री अनंतनाथ भगवान की आयु तीस लाख वर्ष की थी एवं उनका कुमार काल सात लाख हजार वर्ष का था। श्री अनंतनाथ भगवान इक्ष्वाकु वंश के थे एवं भगवान का शरीर सुवर्ण वर्ण का था। भगवान को वैराग्य बिजली गिरते हुए देखने से हुआ था । श्री अनंतनाथ भगवान को चैत्र कृष्णा अमावश को अपरान्ह काल में अयोध्या नगर के सहेतुक वन में पीपल वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। भगवान श्री अनंतनाथ का केवली काल दो वर्ष कम साड़े सात लाख वर्ष का था । श्री जी के समवशरण में पचास गणधर विराजते थे इनमें प्रमुख गणधर श्री जयार्य (अरिष्ट) जी थे ।

अब हम श्री अनंतनाथ जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है,,, तृतीय तीर्थंकर श्री श्री संभवनाथ जी की टोंक की ओर ।।

14. श्री संभव नाथजी जिनराज का श्री धवल कूट

भगवान् अनंतनाथ जी की टोंक दर्शन के बाद अब कठिन चढाई पार कर आगे की ओर बढ़ते हुए पहुँचते है, तीसरे तीर्थंकर श्री संभवनाथ जी की टोंक पर । बोलिये **"श्री संभवनाथ जी जिनराज का श्री धवल कूट है जेह"**

भगवान श्री सम्भवनाथ जी चैत्रशुक्ल षष्ठी को ज्येष्ठ नक्षत्र के अपरान्ह काल में श्री सम्मेद शिखर के श्री धवल कूट से मोक्ष को प्राप्त हुए थे । अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है, अपने तीसरे तीर्थकर के जीवन की कुछ बातें

श्री अजितनाथ भगवान के मोक्ष जाने के दस लाख कोटि सागर समय बीत जाने के बाद श्री सम्भवनाथ भगवान का जन्म हुआ था। भगवान श्री संभवनाथ इक्ष्वाकु वंश एवं स्वर्ण वर्ण शरीर वाले थे । मेघ (बादलों) के विनाश का देखना भगवान के वैराग्य का कारण था। भगवान श्री सम्भवनाथ जी को कार्तिक कृष्णा चतुर्थी की श्री वस्ती नगरी के सहेतुक वन में शाल वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था । भगवान श्री सम्भवनाथ जी के समवशरण में एक सौ पाँच गणधर विराजते थे, इनमें श्री चारूदत्त जी प्रमुख गणधर थे ।

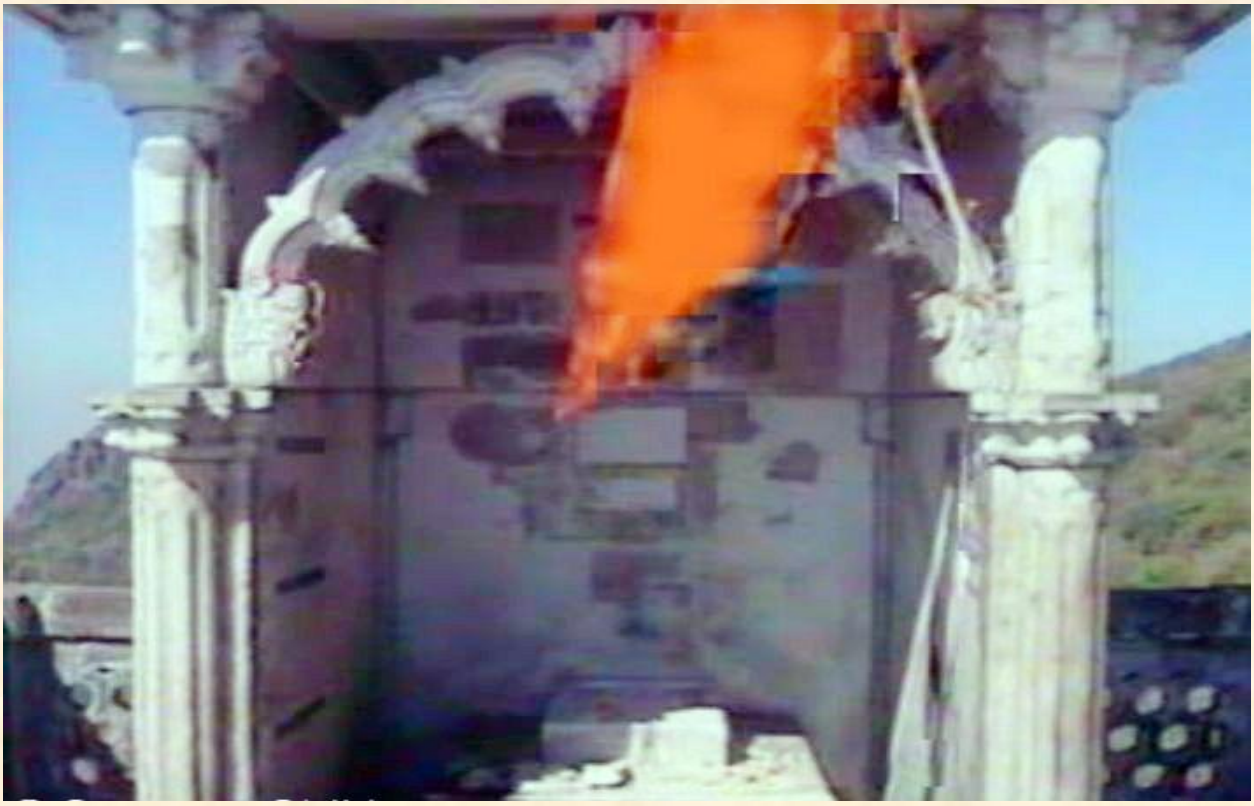

अब हम श्री संभवनाथ जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है,,, बाहरवें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जी की टोंक की ओर ।।

15. श्री वासुपूज्यजी जिनराज का कूट

भगवान् संभवनाथ जी की टोंक दर्शन के बाद अब आगे बढ़ते है, अगली 2 टोंक पर जाने के लिए जलमंदिर व् पार्श्वनाथ टोंक के रास्ते की विपरीत दिशा में,,, यहाँ बारहवे तीर्थंकर व् चौथे तीर्थंकर की क्रम से टोंके बनी हुई है, तो अब हम आते है,,, श्री वासुपूज्य जी की टोंक पर । बोलिये **"श्री वासुपूज्य जी जिनराज का कूट है जेह"**

श्री वासुपूज्य भगवान को भादो शुक्ल चौदस को अपरान्ह काल में चम्पापुर नगर के मंदारगिरी पर्वत से मोक्ष प्राप्त हुआ था। अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है, अपने बारहवे तीर्थंकर के जीवन की कुछ बातें

श्री श्रेयांसनाथ भगवान के मोक्ष जाने के बहत्तर लाख वर्ष कम चौवन सागर बीत जाने पर श्री वासुपूज्य भगवान का जन्म हुआ था। भगवान श्री वासुपूज्य जी इक्ष्वाकु वंश के थे एवं भगवान का शरीर केसर के समान वर्ण का था। भगवान को वैराग्य, जाति स्मरण से हुआ था। श्री वासुपूज्य भगवान को माद्य सुदी दोज की अपरान्ह काल में चम्पापुर नगर के मनोहर वन में पाटल वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। श्री जी के समवशरण में छियासठ गणधर विराजते थे, इनमें प्रमुख गणधर श्री मन्दिर जी थे। श्री वासुपूज्य भगवान ऐसे पहले ब्रह्मचारी तीर्थंकर है जिनके पाँचो कल्याणक एक ही स्थान चंपापुर में हुए हैं। भगवान वासुपूज्य के शासन काल में श्री तारक नाम के प्रतिनारायण एवं श्री अचल नाम के रूद्र हुये।

अब हम श्री वासुपूज्य भगवान जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है,,, चतुर्थ तीर्थंकर श्री अभिनन्दन नाथ जी की टोंक की ओर ।।

16. श्री अभिनन्दन नाथ जी जिनराज का आनंद कूट

भगवान् वासुपूज्य जी की टोंक दर्शन के बाद अब आगे बढ़ते है, अगली टोंक पर जो इसी रास्ते पर आगे विराजमान है, अब हम आते है,,, श्री अभिनन्दन नाथ जी की टोंक पर । बोलिये **"श्री अभिनन्दन नाथ जी जिनराज का आनंद कूट है जेह"**

भगवान श्री अभिनंदन नाथ वैशाख शुक्ल छट को पूर्वान्ह काल में श्री सम्मेद शिखर के श्री आनंद कूट से मोक्ष को प्राप्त हुए थे। अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है, अपने चौथे तीर्थकर के जीवन की कुछ बातें

श्री संभवनाथ भगवान के मोक्ष जाने के नौ लाख करोड़ सागर समय बाद श्री अभिनंदन नाथ भगवान का जन्म हुआ था । भगवान श्री अभिनंदन नाथ इक्ष्वाकु वंश के थे एवं भगवान का शरीर स्वर्ण वर्ण का था। भगवान को वैराग्य गंधर्वनगर के नाश को देखकर हुआ था। भगवान को पौष शुक्ला चतुर्दशी को अपरान्ह काल में अयोध्या नगर के उग्रवन में सरल वृक्ष के नीचे केवल ज्ञान प्राप्त हुआ था। भगवान के समवशरण में एक सौ तीन गणधर विराजते थे एवं प्रमुख गणधर श्री वज्रचमर (वज्रनाभि) थे।

अब हम श्री अभिनन्दन नाथ भगवान जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है,,, पंद्रहवे तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जी की टोंक की ओर ।।

17. श्री धर्मनाथजी जिनराज का सुदत्तवर कूट

भगवान् अभिनन्दन नाथ जी की टोंक दर्शन के बाद इसी मार्ग से वापिस होते हुए, अब बाये हाथ पर आगे बढ़ते हुए आते है, अगली श्री धर्मनाथ जी की टोंक पर । बोलिये **"श्री धर्मनाथ जी जिनराज का सुदत्तवर कूट है जेह"**

भगवान श्री धर्मनाथ जी को ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी को अपरान्ह काल में श्री सम्मेद शिखर के श्री सुदत्तवर कूट से मोक्ष प्राप्त हुआ था। अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है, अपने पन्द्रवे तीर्थकर के जीवन की कुछ बातें

भगवान श्री धर्मनाथ का जन्म कुरूवंश में हुआ था भगवान धर्मनाथ की आयु दस लाख वर्ष की थी एवं कुमार काल पच्चीस हजार वर्ष का था। भगवान का शरीर सुवर्ण वर्ण का था। भगवान को वैराग्य उल्कापात (बिजली गिरना) देखने से हुआ था। श्री धर्मनाथ भगवान को पौष शुक्ला पूर्णिमा को अपरान्ह काल में रत्नपुर नगरी के सेहुतक वन में दधिपर्ण वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। भगवान का केवली काल एक वर्ष कम पच्चीस हजार वर्ष का था। श्री जी के समवशरण में तेतालिस गणधर विराजते थे इनमें प्रमुख गणधर श्री अरिष्ट सेन जी थे। श्री धर्मनाथ भगवान के शासनकाल में श्री मघवा एवं श्री सनत्कुमार नामक दो चक्रवर्ती तथा श्री सुदर्शन एवं श्री बलदेव नामक दो बलदेव हुए। इसके अलावा श्री पुरूष सिंह नाम के नारायण एवं निशुम्भ नाम के प्रतिनारायण तथा श्री अजित नाभि नाम के रूद्र हुए।

अब हम श्री धर्मनाथ भगवान जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है,,, उन तीर्थंकर की टोंक पर जिनके गणधरो की संख्या सबसे अधिक थी।

18. श्री सुमतिनाथ जी जिनराज का अविचल कूट

भगवान् धर्मनाथ जी की टोंक दर्शन के बाद इसी मार्ग पर आगे बढ़ते हुए आते है, अगली श्री सुमतिनाथ जी की टोंक पर । बोलिये **"श्री सुमतिनाथ जी जिनराज का अविचल कूट है जेह"**

श्री सुमतिनाथ भगवान चैत्र शुक्ल ग्यारस को पूर्वान्ह काल में श्री सम्मेद शिखर के श्री अविचल कूट से मोक्ष प्राप्त हुए थे । अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है, अपने पांचवे तीर्थकर के जीवन की कुछ बातें

भगवान श्री सुमतिनाथ इक्ष्वाकु वंश के थे, एवं भगवान का शरीर सुवर्ण वर्ण का था । भगवान को वैराग्य, जाति स्मरण को देखकर हुआ था । श्री सुमतिनाथ भगवान के समवशरण में एक सौ सोलह गणधर विराजते थे । इनमें प्रमुख गणधर श्री वज्रसेन (अमर वज्र) थे ।

इस टोंक के बाद अब इसी मार्ग पर आगे की ओर आती है, शांतिनाथ भगवान् की कुंदप्रभ टोंक !

19. भगवान श्री शांतिनाथ का श्री कुंदप्रभ कूट

भगवान श्री शांतिनाथ का जन्म इक्ष्वाकु वंश में हुआ था । तथा उनकी आयु एक लाख वर्ष की थी ।

उनका बचपन पच्चीस हजार वर्ष का था एवं भगवान का शरीर तपाये हुए स्वर्ण वर्ण जैसा था। भगवान शांतिनाथ पांचवे चक्रवर्ती राजा एवं बारहवें कामदेव थे । श्री शांतिनाथ भगवान ने पचास हजार वर्ष तक राज्य किया । श्री शांति नाथ भगवान को जाति स्मरण से वैराग्य हुआ था । श्री शांतिनाथ भगवान को पौष शुक्ल दशमी को अपरान्ह काल में हस्तिनापुर नगर के आग्रवन में नंदी वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था ।

भगवान शांतिनाथ का केवली काल चौबीस हजार नौ सौ चौरासी वर्ष का था । श्री जी के समवशरण में छत्तीस गणधर विराजते थे इनमें प्रमुख गणधर श्री चक्रायुद्ध थे। भगवान श्री शांतिनाथ को ज्येष्ठ कृष्णा चौदह को अपरान्ह काल में श्री सम्मेद शिखर के श्री कुंदप्रभ कूट से मोक्ष प्राप्त हुआ था ।

अब श्री शांतिनाथ भगवान जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है,,, भगवान् महावीर की टोंक पर ।।

20. श्री भगवान महावीर जी जिनराज का कूट

भगवान् शांतिनाथ जी की टोंक दर्शन के बाद इसी मार्ग पर आगे बढ़ते हुए आते है, अगली श्री महावीर स्वामी जी की टोंक पर । बोलिये **"श्री भगवान महावीर जी जिनराज का कूट है जेह"**

श्री भगवान महावीर कार्तिक कृष्णा अमावश्या को प्रातः काल श्री पावापुर से मोक्ष गये थे। अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है, अपने चौबीसवें तीर्थकर के जीवन की कुछ बातें !

श्री महावीर भगवान का जन्म नाथ वंश में हुआ था। भगवान की आयु बहत्तर वर्ष की थी व् कुमार काल तीस वर्ष का था। भगवान का शरीर स्वर्ण वर्ण का था। भगवान को जाति स्मरण से वैराग्य हुआ था। श्री महावीर भगवान को बैशाख शुक्ल दशमी को पूर्वान्ह काल में ऋजुकूला नदी के किनारे शाल वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था ।

भगवान का केवली काल तीस वर्ष का था । श्री जी के समवशरण में ग्यारह गणधर विराजते थे, इनमें प्रमुख गणधर श्री गौतम जी थे। श्री महावीर स्वामी का तीर्थ प्रवर्तन काल इक्कीस हजार ब्यालिस वर्ष का है।

अब श्री महावीर भगवान जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है,,, भगवान् सुपार्श्वनाथ जी की टोंक पर ।।

21. श्री सुपार्श्वनाथ जी जिनराज का प्रभास कूट

भगवान् महावीर जी की टोंक दर्शन के बाद इसी मार्ग पर आगे बढ़ते हुए आते है, अगली श्री सुपार्श्वनाथ जी की टोंक पर । बोलिये **"श्री सुपार्श्वनाथ जी जिनराज का प्रभास कूट है जेह"**

भगवान श्री सुपार्श्वनाथ को फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को अपरान्ह काल में श्री सम्मेद शिखर के श्री प्रभास कूट से मोक्ष प्राप्त हुआ था। अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है, अपने सुपार्श्वनाथ तीर्थकर के जीवन की कुछ बातें !

श्री पद्मप्रभुजी भगवान के मोक्ष जाने के नौ हजार करोड़ सागर समय पश्चात् श्री सुपार्श्वनाथ जी भगवान का जन्म हुआ था। भगवान श्री सुपार्श्वनाथ जी इक्ष्वाकु वंश के थे एवं भगवान का शरीर हरित वर्ण का था। भगवान को वैराग्य बसंत लक्ष्मी का नाश (पतझड़) देखकर हुआ था। श्री सुपार्श्वनाथ जी भगवान को फाल्गुन कृष्ण छट के अपरान्ह काल में सहेतुक वन के शिरीष वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था।

श्री जी के समवशरण में पंचानवे गणधर विराजते थे इनमें प्रमुख गणधर श्री बलदत्त थे।

अब श्री सुपार्श्वनाथ भगवान जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है,,, भगवान् विमलनाथ जी की टोंक पर ।

22. श्री विमलनाथ जी जिनराज का सुवीर (संकुल) कूट

भगवान् सुपार्श्वनाथ जी की टोंक दर्शन के बाद इसी मार्ग पर आगे बढ़ते हुए आते है, अगली श्री विमलनाथ जी की टोंक पर । इस टोंक से 2 रास्ते है, एक छोटा रास्ता सीधे कुंथुनाथ जी टोंक होते हुए, शीतल नाला तक जाता है, दूसरा रास्ता अजितनाथ जी व् नेमिनाथ जी की टोंक होते हुए सीधे पार्श्वनाथ जी की टोंक पर जाता है ।। बोलिये **"श्री विमलनाथ जी जिनराज का सुवीर (संकुल) कूट"** है जेह

भगवान श्री विमलनाथ जी को अषाढ़ कृष्ण अष्टमी को अपरान्ह काल में श्री सम्मेद शिखर के श्री सुवीर (संकुल) कूट से मोक्ष प्राप्त हुआ था। अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है, अपने विमलनाथ जी तीर्थकर के जीवन की कुछ बातें !

श्री विमल नाथ भगवान इक्ष्वाकु वंश के थे एवं भगवान का शरीर सुवर्ण वर्ण का था। भगवान को वैराग्य मेघ देखकर हुआ था। श्री विमल नाथ भगवान को माघ शुक्ल छट को अपरान्ह काल में कम्पिल नगर के सहेतुक वन में जामुन वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। श्री जी के समवशरण में पचपन गणधर विराजते थे, इनमें प्रमुख गणधर श्री जय जी थे।

श्री विमलनाथ भगवान के शासन काल में श्री धर्मनाम बलदेव, स्व. श्री स्वयंभू नाम के नारायण, श्री मेरक नाम के प्रतिनारायण तथा श्री पुण्डरीक नाम के रूद्र हुए।

अब श्री विमलनाथ भगवान जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है,,, भगवान् अजितनाथ जी की टोंक पर।

23. श्री अजितनाथ जी जिनराज का श्री सिद्धवर कूट

भगवान् विमलनाथ जी की टोंक दर्शन के बाद इसी मार्ग पर आगे बढ़ते हुए आते है, अगली श्री अजितनाथ जी की टोंक पर । बोलिये **"श्री अजितनाथ जी जिनराज का श्री सिद्धवर कूट है जेह"**

भगवान श्री अजितनाथ चैत्र शुक्ल पंचमी को पूर्वान्हकाल में श्री सम्मेद शिखर के श्री सिद्धवर कूट से मोक्ष को प्राप्त हुए थे । अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है, अपने अजितनाथ जी तीर्थकर के जीवन की कुछ बातें !

भगवान श्री आदिनाथ के मोक्ष जाने के पचास लाख करोड़ सागर समय बाद भगवान श्री अजित नाथ का जन्म हुआ था । भगवान श्री अजितनाथ इक्ष्वाकु वंश के थे । भगवान को पौष शुक्ल ग्यारस को अयोध्या नगरी के सेहतुल वन में सप्तपर्ण वृक्ष के नीचे केवल ज्ञान प्राप्त हुआ था । भगवान के समवशरण में नब्बे गणधर विराजते थे । इनमें प्रमुख गणधर श्री केसरी सेन थे । श्री अजितनाथ भगवान के समय ढाई द्वीप में सबसे अधिक एक सौ सत्तर तीर्थकर विद्यमान थे ।

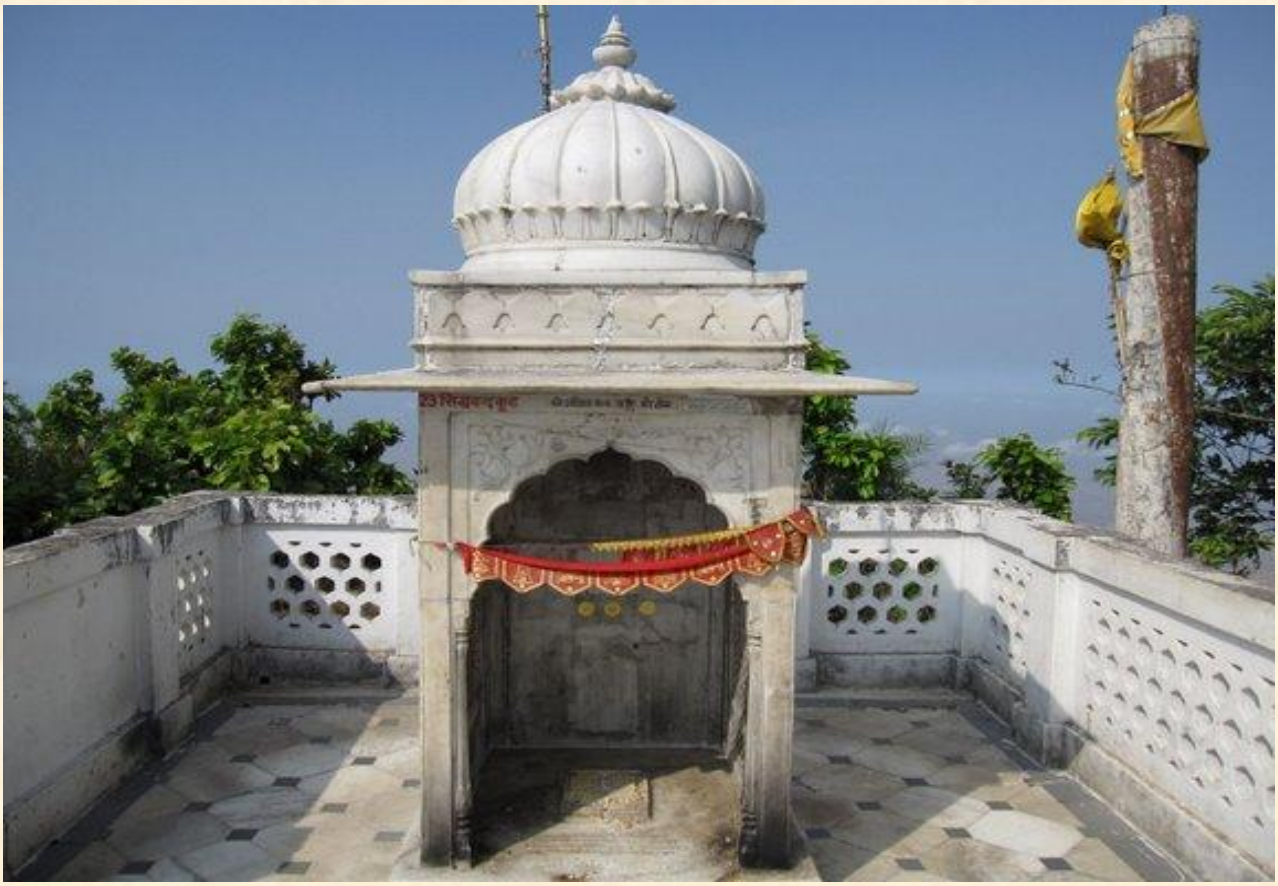

अब श्री अजितनाथ भगवान जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है,,, भगवान् नेमिनाथ जी की टोंक पर।

24. श्री नेमिनाथ जी जिनराज का कूट

भगवान् अजितनाथ जी की टोंक दर्शन के बाद इसी मार्ग पर आगे बढ़ते हुए आते है, अगली श्री नेमिनाथ जी की टोंक पर । बोलिये **"श्री नेमिनाथ जी जिनराज का कूट है जेह"**

श्री नेमिनाथ भगवान को आषाढ़ सुदी अष्टमी को सांय काल में गिरनार पर्वत के उर्जयन्त टोंक से मोक्ष प्राप्त हुआ था। अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है, अपने नेमिनाथ जी तीर्थकर के जीवन की कुछ बातें!

२१वें श्री नमिनाथ भगवान के मोक्ष जाने के एक हजार कम पाॅच लाख वर्ष पश्चात् श्री नेमिनाथ भगवान हुए। श्री नेमिनाथ भगवान का जन्म यादव वंश में हुआ था। भगवान की आयु एक हजार वर्ष की थी। भगवान श्री का कुमार काल तीन सौ वर्ष का था। भगवान को वैराग्य, बँधे हुए पशुओं को देखकर हुआ था। श्री नेमिनाथ भगवान को आश्विन शुक्ला एकम को पूर्वान्ह काल में उर्जयन्त पर्वत (गिरनार पर्वत) पर मेघश्रृंग वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। उनका केवलीकाल छह सौ निन्यानवे वर्ष दस महीने चार दिन का था। श्री जी के समवशरण में ग्यारह गणधर विराजते थे तथा प्रमुख गणधर श्री वरदत्त जी थे। श्री नेमिनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल चौरासी हजार तीन सौ अस्सी वर्ष का रहा।

अब श्री नेमिनाथ भगवान जी की टोंक से आगे बढ़ते हुए चलते है,,, भगवान् पार्श्वनाथ जी की टोंक पर, जो इस वंदना की अंतिम टोंक है ।

25. श्री पार्श्वनाथ जी जिनराज का स्वर्णभद्र कूट

भगवान् नेमिनाथ जी की टोंक दर्शन के बाद इसी मार्ग पर आगे बढ़ते हुए आते है, अगली श्री पार्श्वनाथ जी की टोंक पर । बोलिये श्री पार्श्वनाथ जी जिनराज का स्वर्णभद्र कूट है जेह

भगवान श्री पार्श्वनाथ जी को श्रावण शुक्ल सप्तमी को अपरान्ह काल में श्री सम्मेद शिखर जी के श्री स्वर्णभद्र कूट से मोक्ष प्राप्त हुआ था । अब मन में भाव बनाते हुए भगवान् का स्मरण करते है, अपने पार्श्वनाथ जी तीर्थकर के जीवन की कुछ बातें

श्री नेमिनाथ भगवान के मोक्ष जाने के तिरासी हजार छह सौ पचास वर्ष बीत जाने के पश्चात श्री पार्श्वनाथ भगवान का जन्म हुआ था। श्री पार्श्वनाथ भगवान का जन्म उग्र वंश में हुआ था। भगवान की आयु एक सौ वर्ष की थी कुमार काल तीस वर्ष का था । भगवान का शरीर हरितश्याम वर्ण का था । भगवान को वैराग्य जातिस्मरण से हुआ था । श्री पार्श्वनाथ भगवान को चैत्र कृष्ण चतुर्थी को पूर्वान्ह काल में शुक्रपुर नगर के अश्वत्थ वन में धव वृक्ष के नीचे केवल ज्ञान प्राप्त हुआ था । भगवान का केवली काल उन्नतर वर्ष आठ माह का था। श्री जी के समवशरण में दस गणधर विराजते थे, इनमें प्रमुख गणधर श्री स्वयंभू जी थे। श्री पार्श्वनाथ भगवान का तीर्थ प्रवर्तन दो सौ अठहत्तर वर्ष का था।

अब श्री पार्श्वनाथ भगवान जी की टोंक के दर्शन के साथ ही यह वंदना पूर्ण हुई, अब लंबे रास्ते को तय करते हुए, पर्वत से नीचे उतरते है।

सम्मेद शिखर - वंदना विशेष

तेरहवीं सदी के विद्वान यति मदनकीर्ति ने जी ने सम्मेद शिखर के बारे में जो वर्णन किया है, उसमे तीन बातों का उल्लेख किया गया है ।

१. इस क्षेत्र पर सौधर्म इंद्र ने 20 तीर्थंकरो की प्रतिमा स्थापित की थी ।
२. उन प्रतिमाओं का प्रभामंडल प्रतिमाओं के आकार का था, इसलिए उनकी ओर देखने के लिए पुन्यजनो की श्रद्धा की आँखें ही समर्थ होती थी । जिनके हृदय में श्रद्धा भाव नही होते, उनकी आँखें इन प्रभापुंज-स्वरुप प्रतिमाओं को नही देख सकती ।
३. यति जी के काल तक, अर्थात तेरहवीं शताब्दी तक इस तीर्थराज पर दिगंबर समाज का आधिपत्य था ।

इस वर्णन से यह फलितार्थ निकलता है, कि पहले सम्मेद शिखर के ऊपर 20 मंदिर बने हुए थे । यह मंदिर कितने बड़े थे, यह तो पता नही चल सकता ।।
यतिवर्य मदनकीर्ति के काल में, सम्मेद शिखर पर एक "अमृतवापिका" भी थी । जिसमे भक्तजन अष्टद्रव्यो से 20 तीर्थंकरो के लिए द्रव्य चढ़ाते थे ।

———

"यस्या पायसि नामबिंशतिभिता पूजाअष्ठधा क्षिप्यते,
मंत्रोच्चारण - बंधूरेण युगपन्निग्रंथरूपातनाम ।
श्रीमतीर्थकृतां यथायतमियं संसंपनीपध्यते,
संमेदामृतवापिकेयं वताद्दग्वासंसा शासनम ।।
~【शासन चतुस्विशिका -१४】

अगली वंदना सिद्धक्षेत्र श्री गिरनारजी...

***

अपनी राय व् सुझाव हेतु संपर्क कर सकते है !

सुलभ जैन (बाह)
(+91 7835917102)

---जय जिनेन्द्र---